फरीदाबाद
मजदूर समाचार
मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया
नई सीरीज नम्बर 104
फरवरी 1997

इस अंक में

क्यों जानें ? क्या-क्या जानें ? कैसे जानें ? क्या-क्या कर सकते हैं ? (2)

हाँकने वालों की भाषा

दिसम्बर 96 अंक में "क्यों जानें?" के निष्कर्ष के तौर पर हम इस नतीजे पर पहुँचे थे : "कल हमारे साथ जिसके होने की बड़ी सम्भावना है, जिसका होना निश्चित है उससे निपटने के लिये जानें।"

"क्यों जानें?" पर चर्चा के दौरान जानकारियों की बाढ की बात आई थी। ज्यादातर ज्ञान हमारे लिये फालतू तो है ही, नुकसानदायक भी है। फिर भी उसका खूब प्रचार-प्रसार किया जाता है क्योंकि ऊँच-नीच वाली व्यवस्था का, सिर-माथों के पिरामिडों वाले सिस्टम का बोलबाला है। हाँकने वालों का दबदबा है, हाँकने वालों की भाषा छायी हुई है। इसलिये "क्या-क्या जानें?" पर विचार करने के दौरान निरर्थक को, हानिकारक को खारिज करने के लिये भी हमें कसरत करनी पड़ेगी। हावी सोच-विचार को नकारे बिना हम अपने हित की बातें ठीक से नहीं कर सकते क्योंकि हकीकत हमें जो राहें दिखाती है उनके उलट राहों पर हावी बोल-भाषा-सोच-विचार हमें धकेलते हैं। थोड़ा कुरेदने पर "नारा लगाओ" जैसी सीधी-सी लगती बात में भी हाँकने वालों के दलदल की झलक देखी जा सकती है, कुरेद कर देखिये!

यहाँ हम हर प्रकार के मठाधीश और मठाधीश बनने की इच्छा रखने वालों के अति प्रिय शब्द **"एकता"** की कुछ चीर-फाड़ करेंगे।

शिक्षा-दीक्षा और प्रचार-प्रसार का इतना असर है कि हम "एकता" को कोई बहुत बढिया चीज मानते रहे हैं। परिवार में एकता, गाँव की एकता, प्रान्त की एकता, देश की एकता, दुनियाँ की एकता, गोत्र की एकता, जाति की एकता, वर्ण की एकता, पन्थ की एकता, धर्म की एकता, मानवों की एकता, जीवों की एकता, डिपार्टमेन्ट के मजदूरों की एकता, शिफ्ट के मजदूरों की एकता, फैक्ट्री के मजदूरों की एकता, फरीदाबाद के मजदूरों की एकता, भारत के मजदूरों की एकता, दुनियाँ के मजदूरों की एकता आदि-आदि-आदि एकताओं को पवित्र गऊओं के रूप में हम स्वीकार करते रहे हैं।

हम किराये के कमरे रूपी घर में हों चाहे कहीं बाहर, किसी न किसी एकता के प्रवचन हमें सुनने ही पड़ते हैं और हम भी विभिन्न रूप-रंग की एकताओं को पवित्र मानते हुये कभी इस तो कभी उस एकता की जिन्दाबाद के नारे लगाते हैं। एकताओं की जयजयकार ही नहीं करते बल्कि हम उन्हें चन्दा देने, उनके जलूस में जाने के लिए कष्ट भी उठाते हैं और हम में से कुछ तो इस-उस एकता के वास्ते लाठी-गोली चलाने व खाने तक के दर्द झेलते हैं। कई एकतायें एक-दूसरे के खिलाफ हैं और जिस समय हम पर जिस एकता का चश्मा चढा होता है उस समय उस एकता के लिये किये जाने वाली बुरी से बुरी हरकतों को भी जायज ठहराते हैं, उन्हें महिमामंडित करते हैं।

परन्तु ... परन्तु **ऊँच-नीच की शिखरों के ऊँचे उठते जानें के संग-संग हमारा जीवन बद से बदतर होता जाता है।**

दरअसल विभिन्न प्रकार की एकतायें पिरामिडों की तरह के रथ हैं जिनके संचालन के लिए पद हैं, पोस्ट हैं। कोई पदधारी श्री-श्री 5 है तो कोई श्री-श्री 108 और कोई श्री-श्री 1008 महामहिम। प्रत्येक पद अपने लिये सुख-सुविधा व रौब-दाब लिये होता है पर इनमें सन्तरी से मन्त्री तक के फर्क होते हैं। इसलिये पदों, ऊँचे पदों के लिये खूब मारा-मारी होती है। इस मारा-मारी से कई भेद उजागर होते हैं पर असल राज, तन्त की बात छुपी ही रहती है क्योंकि एकता का राग प्रत्येक मठाधीश और मठाधीश बनने के लिए प्रयत्नशील प्रत्येक व्यक्ति की अनिवार्य आवश्यकता है। **एकतायें नहीं होंगी तो हाँकने वाले बेरोजगार हो जायेंगे !**

अपनी बढती दुर्गत और हाँकने वालों के बीच होते आरोपों-प्रत्यारोपों के चलते हम "एकता नहीं होने", "असली एकता नहीं होने", "फौलादी एकता नहीं होने", "आँखों वाली एकता नहीं होने" के रोने अक्सर रोते हैं। परिवार के कर्ता, गाँव के मुखिया, जाति के चौधरी, पन्थ के महामण्डलेश्वर, देश के कर्णधार, मजदूरों के लीडर द्वारा धोखा देने, दगा करने, बेच खाने की छाती पीटते हैं। परन्तु जिनकी आड़ में हमारा शिकार किया जाता है उन एकता-रूपी पवित्र गऊओं पर हम आमतौर पर प्रश्न नहीं उठाते।

वास्तव में हर प्रकार की एकता विद्यमान ऊँच-नीच को बनाये रखने अथवा किसी नई ऊँच-नीच के निर्माण की अनिवार्य आवश्यकता है। एकता की पहली शर्त है कि नीचे वालों की नकेल ऊपर वालों के हाथों में हो। इसलिये हर प्रकार की एकता में सोचना-समझना और निर्णय लेना बहुसंख्यक के हाथों से छीन कर चन्द लोगों के अधिकार में होना जरूरी होता है। ऐसा रस्म-रिवाज की आड़ में किया जाये चाहे चुनाव के जरिये परन्तु इसका अर्थ एक ही होता है : चन्द लोग विचार-विमर्श करने व निर्णय लेने वाले होंगे और बहुसंख्यक लोग उनके हुकमों के मुताबिक चलेंगे। इसीलिये एकता का मतलब बहुसंख्यक का भाषण सुनने वाले व नारे लगाने वाले बनना है।

हर एक का विचार-विमर्श व निर्णय लेने में शामिल होना हुकम देने वालों के लिये, भाषणबाजों के लिये, लीडरों के लिए, हाँकने वालों के लिए कोई जगह नहीं छोड़ता। इस सिलसिले में अगले अंक में हम 20 जनवरी को जनरल बॉडी मीटिंग में एस्कोर्ट्स लीडरों के भाषणों के इन शब्दों, "बुद्धि हमारी, ताकत तुम्हारी" पर विचार करेंगे। ■

प्रेम-पत्र कोटा स्टाइल

एक भारी उद्योग की मैनेजमेन्ट श्रमिकों को नित्य 10—20 वार्निंग, चार्जशीट आदि देती थी। यह संख्या कभी-कभी 3—4 गुणी तक बढ जाती थी। आखिर तंग आ कर श्रमिकों ने मैनेजमेन्ट को अपनी महबूबा मान कर प्रेम-पत्र लिखने शुरू कर दिये और चार्जशीटों के जवाब में फिल्मी पत्रिकाओं में प्रकाशित हसीन फोटो चिपका कर भेजनी शुरू कर दी। जवाब कानूनी भाषा में न दे कर अपनी अठरंगी देहाती बोली में देने शुरू कर दिये और प्रबन्धकों से कहा कि तुम्हारी भाषा हम नहीं समझते। हम तो हमारी भाषा समझते हैं।

14.1.97 — **महेन्द्र नेह**, कोटा

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद-121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच मछली मार्केट की बगल में है।)

बड़ोदा से डॉक्टर की सलाह

मजदूर भाई-बहनों को चाहिये कि जिस भी व्यवसाय में वे हैं उसमें क्या-क्या जोखिम हैं और उनसे कैसे बचा जा सकता है उसकी जानकारी अवश्य रखें। स्वास्थ्य सम्बन्धी जो भी सुविधा उपलब्ध हो उसका सही-सही इस्तेमाल करें और जो सुविधा नहीं हैं उन्हें मैनेजमेन्ट से प्राप्त करें। कानून व प्रावधानुसार भी ऐसी सुविधायें माँग सकते हैं। यदि आप दी जाती सेफ्टी सुविधा का उचित उपयोग नहीं करते हो तो शारिरिक हानि की पूरी सम्भावना है और उसके लिये मैनेजमेन्ट को दोषी ठहराना ठीक नहीं है। जब भी कार्यक्षेत्र में कोई बाधा आपकी नजर में आये, सेफ्टी अफसर—लेबर अफसर को तुरन्त सूचित करें। व्यवसायजन्य विविध प्रकार के रोगों, शारिरिक हानियों से पूर्णतः बचना बहुत दुर्गम है लेकिन नामुमकिन नहीं है। इसलिये हर एक कामगार को चाहिये कि अपनी सेहत के प्रति जाग्रत रहे। जो भी मेडिकल सुविधा उपलब्ध है उससे समय पर शारिरिक जाँच करा लेना जरूरी है। व्यवसायजन्य बीमारियों के लिये मुआवजे का कानून व प्रावधान है। पर ऐसा नुकसान मोल ले कर फिर मुआवजे की कार्यवाही से बेहतर है कि अपने स्वास्थ्य के प्रति सतर्कता बरतें ।

15.1.97 — **डॉ. सुभाष मोरे,** बड़ोदा

एक और तालाबन्दी

25 जनवरी को मैगपाई की बगल में मथुरा रोड़ पर स्थित **डेल्टन केबल्स** फैक्ट्री में मैनेजमेन्ट ने तालाबन्दी कर दी है। कारण?

1. कम्पनी के बही-खातों के अनुसार 13 करोड़ रुपये के प्रोडक्शन पर 12.50 प्रतिशत बोनस दिया था पर 18 करोड़ रुपये के उत्पादन पर 96 में दिवाली पर 8.33 परसैन्ट बोनस दिया। इस पर लीडर मामले को श्रम एवं समझौता अधिकारी के पास ले गये जहाँ यह पेन्डिंग है।

2. इलेक्ट्रिशियनों, फिटरों, वैल्डरों को उनके जॉब से हटा कर प्रोडक्शन में हैल्परों के तौर पर भेज दिया। श्रम विभाग में इसकी शिकायत करने पर लेबर अफसर ने उन वरकरों को उनकी जॉब पर भेजने के आदेश दे दिये हैं पर फिर भी डेल्टन केबल्स मैनेजमेन्ट उनसे प्रोडक्शन में हैल्परों का काम करवा रही है।

3. कैन्टीन में चाय और दाल मिलती थी। मजदूर रोटी की डिमाण्ड कर रहे थे। डेल्टन मैनेजमेन्ट ने 13 जनवरी से चाय भी बन्द कर दी।

4. मजदूरों में बढते असन्तोष के दृष्टिगत 12 जनवरी से लीडरों ने दो-दो, तीन-तीन घन्टे की टूल डाउन स्ट्राइक शुरू करवाई।

5. मैनेजमेन्ट ने 15 जनवरी को दो लीडर सस्पैन्ड कर दिये।

लीडरों ने फरीदाबाद में प्रशासन को शिकायतें तो की ही, कई शिकायतें लेबर कमिश्नर को चन्दीगढ़ भी भेजी पर कोई सुनवाई नहीं की गई। उल्टे, मजदूरों को दबाने के लिए डेल्टन मैनेजमेन्ट ने 25 जनवरी से तालाबन्दी कर दी है और पुलिस-प्रशासन प्रबन्धकों से मिल कर मजदूरों को फैक्ट्री से 200 गज की दूरी पर ही रोक रहा है।

डेल्टन केबल्स के 277 मजदूरों पर तालाबन्दी थोप कर पुलिस की मदद से मैनेजमेन्ट फैक्ट्री से माल निकाल रही है और स्टाफ के लोगों से प्रोडक्शन भी करवा रही है। ■

तालाबन्दी-हड़ताल

8 अक्टूबर 96 को **अमेटीप मशीन टूल्स** मैनेजमेन्ट द्वारा फैक्ट्री में तालाबन्दी करने पर मजदूर जबरन फैक्ट्री में आते-जाते रहे तब मैनेजमेन्टों के संग-संग पुलिस-प्रशासन में भी हड़कम्प मच गया था। अमेटीप के 500 मजदूरों द्वारा फैक्ट्रियों की शिफ्ट छूटने के समय 11 अक्टूबर को मथुरा रोड़ पर निकाला गया जलूस अन्य फैक्ट्रियों के मजदूरों के शामिल होने से दस हजार का जलूस बन गया तब साहबों में हड़कम्प बढ गया था। **मैनेजमेन्टें तालाबन्दी करती ही मजदूरों को दबाने के लिये हैं** और इसीलिए अमेटीप मैनेजमेन्ट ने की थी। परन्तु अमेटीप मजदूरों के कदमों में पासा पलटने का खतरा देख कर एस डी एम और मैनेजमेन्ट भारी पुलिस बल के साथ 12 अक्टूबर को फैक्ट्री पहुँचे थे और फैक्ट्री पर काबिज मजदूरों से समझौता वार्ता आरम्भ की थी पर उनकी दाल गली नहीं। अन्ततः आश्वासनों के संग-संग 16 अक्टूबर को पुलिस द्वारा गोली चलाने की धमकियाँ दे कर अमेटीप फैक्ट्री से मजदूरों को निकाला गया था। आश्वासन आश्वासन थे इसलिए थोथे थे पर इनके फेर में चन्द लोगों द्वारा साहबों के चक्कर पर चक्कर में अमेटीप मजदूरों के बिखरने का सिलसिला आरम्भ हुआ। **मजदूरों को बिखेरना तालाबन्दी का एक मकसद होता है और इसके लिये साहबों के आश्वासन व तारीखें तलवारों के समान हैं।** अपनी ताकत बढाने के लिये कदम उठाने से मजदूरों को रोकने के वास्ते साहबों के आश्वासन और तारीखें धारदार चाकू हैं।

तीन महीने की तालाबन्दी को मजदूरों पर अपनी शर्तें थोपने के लिये पर्याप्त मान कर 31 दिसम्बर को अमेटीप मैनेजमेन्ट ने तालाबन्दी खत्म कर दी। पुलिस के संग-संग अखाड़ों से पहलवानों को भी अमेटीप मैनेजमेन्ट फैक्ट्री लाई — कम्पनी का एक डायरेक्टर अखाड़ों का चीफ गैस्ट बनता रहा है। तालाबन्दी खत्म करने के नोटिस के बाद अमेटीप मजदूर फैक्ट्री में जाने लगे तब मैनेजमेन्ट ने 17 मजदूरों को छोड़ कर अन्दर आने को कहा। मजदूरों द्वारा इसका विरोध करने पर अमेटीप मैनेजमेन्ट ने पहलवानों और पुलिस के जरिये मजदूरों को फैक्ट्री गेट से खदेड़ दिया। पुलिस और पहलवान फैक्ट्री के पहरेदार बने हैं और मजदूरों को फैक्ट्री गेट पर नहीं आने दे रहे तथा मैनेजमेन्ट कहती है कि वरकर हड़ताल पर हैं।

आतंक बढाने के लिये 22 जनवरी को सेन्ट्रल थाने की पुलिस 18 अमेटीप मजदूरों को गिरफ्तार करके ले गई और रात-भर थाने में बन्द रखा। 23 जनवरी को अपने साथियों की जमानत के लिए वरकर जमानती ले कर जब एस डी एम के पास पहुँचे तब बिना किसी सुनवाई के साहब ने उन्हें रोहतक जेल भेज दिया और 28 जनवरी की तारीख दी। अमेटीप मजदूरों ने जमामत नहीं देने का कारण पूछा तब साहब ने कहा, "एस पी साहब का दबाव है और एस पी से मुझे 72 काम पड़ते हैं।" ■

'मिल' मजदूर

रेल के डिब्बे में रेलमपेल,
धक्का-मुक्की धूम धकेल,
इसको, उसको, सबको ठेल,
नई-नई गालियों की फ्री सेल,
शिष्टाचार हो गया फेल।
मिल में घुसे मान कर जेल —
जहाँ निकलता मजदूर का तेल —
टाटा, बाटा, बिड़ला हो या भेल;
सब के सब थामें हैं हमारी नकेल।

हमारे बच्चों को नहीं
कापी, पेंसिल, स्केल;
ये लगाते हैं इत्र फुलेल।
नहीं चाहते हम बनना सेठ —
मगर दे दो हमें पूरा पे-स्केल।
वह हम को मिल पायेगा,
होगा जब हमारा आपस में मेल।

— **बलविन्द सिंह,** दिल्ली

इस अंक की हम पाँच हजार प्रतियाँ ही फ्री बाँट पा रहे हैं। पाँच हजार मजदूर अगर हर महीने एक—एक रुपया दें तो दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

ईस्ट इंडिया मजदूरों से दो बातें

जून 1995 में मैनेजमेन्ट को प्रिन्टिंग टेबलें तोड़ने से रोक कर मजदूरों ने **ईस्ट इंडिया कॉटन मिल** में बड़े पैमाने पर छँटनी को रोक दिया। लीडरों को किनारे धकेल कर मजदूरों ने खुद फैसले ले कर चक्के जाम किये और मैनेजमेन्ट की किसी का भी गेट रोकने की धौंस को नाकारा कर दिया। इस दौरान ईस्ट इंडिया वरकर किसी को नेता नहीं मान रहे थे इसलिए वे मैनेजमेन्ट की जकड़ से मुक्त थे। उस दौर को खत्म करने के लिये मजदूरों के बीच से एक को नये लीडर के तौर पर उभार कर मैनेजमेन्ट ने मजदूरों के नई नकेल डालने की कोशिश की। इसके लिए फैक्ट्री में दस दिन की तालाबन्दी भी की गई परन्तु ईस्ट इंडिया वरकरों ने शीघ्र ही उस लीडर को ठुकरा कर मैनेजमेन्ट के होश उड़ा दिये।

खुद सोच-विचार करते, फैसले लेते और कदम उठाते मजदूरों का कोई ताकत मुकाबला नहीं कर सकती। इसलिये साम-दाम-दण्ड-भेद के जरिये मैनेजमेन्टों की सर्वोपरि कोशिश यह होती है कि मजदूर किसी-न-किसी के पीछे चलें, किसी न किसी को लीडर मानें, किसी-न-किसी को अपनी नकेल थमायें। इसीलिए ईस्ट इंडिया मैनेजमेन्ट ने नेता पैदा करने की कोशिश नये सिरे से की और 96 के मध्य में कुछ मजदूरों को नये हाँकने वाले बनाने में उसे सफलता मिलने लगी। अपने नये मोहरों को पुख्ता करने के लिए मैनेजमेन्ट ने आंशिक तालाबंदी की। बड़े पैमाने पर छँटनी से मजदूरों का ध्यान हटाने के लिये नये हाँकने वालों ने एग्रीमेन्ट की डुगडुगी बजाई। छँटनी के प्रति चौकस ईस्ट इंडिया मजदूरों की आँखों पर परदे डालने के वास्ते एग्रीमेन्ट के लिये कीर्तनों व क्रमिक भूख हड़ताल की नौटंकी के दौरान अगस्त 96 में लिस्टें टाँग कर मैनेजमेन्ट ने पाँच-पाँच, छह-छह साल सर्विस वाले 295 युवा मजदूरों की छँटनी की। उस छँटनी पर ईस्ट इंडिया वरकरों की चुप्पी ने मैनेजमेन्ट का नये हाँकने वालों में भरोसा बढाया। ईस्ट इंडिया मैनेजमेन्ट ने 600 और मजदूरों की छँटनी के लिये 2 सितम्बर 96 को अजन्ता टेबल प्रिन्टिंग खाता बन्द कर दिया। इस पर भड़कते मजदूर असन्तोष से नये हाँकने वालों को लड़खड़ाते देख मैनेजमेन्ट ने अगस्त माह की तनखा दिये बिना 12 सितम्बर को कम्पनी में तालाबन्दी कर दी। नये लीडर कुछ समय पहले तक उनके अगल-बगल काम करते थे व तेज-तर्रार साथियों के तौर पर थे इसलिये ईस्ट इंडिया मजदूरों का उनसे मोहभंग नहीं हुआ था। इसीलिये उन लीडरों के कहे अनुसार वरकर ऊठक-बैठक करते रहे और कमजोर होते रहे।

हर मैनेजमेन्ट जानती है कि बिना धोखाधड़ी और गुमराह किये दस-बीस मजदूरों को नौकरी से निकालना भी लोहे के चने चबाना है। इसलिये उसने साढे चार महीने की तालाबन्दी के बाद लीडरों से 20 जनवरी को मजदूरों में फूट डालने वाला समझौता किया। इस सौदे-समझौते के अनुसार 21 जनवरी से ईस्ट इंडिया की 350 वरकारों वाली 24 सैक्टर स्थित पावरलूम में प्रोडक्शन शुरू हो गया है। ईस्ट इंडिया की 2200 मजदूरों वाली इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित प्रिन्टिंग व प्रोसेसिंग की तालाबन्दी 3 फरवरी को खत्म करने और इससे पहले एग्रीमेन्ट करने के आश्वासन .... लक्षण बता रहे हैं कि यह सारी कसरत 600 मजदूरों की नौकरियाँ खाने के लिये है।

इन 5 महीनों में काम की तलाश में जगह-जगह ठोकरें खा कर ईस्ट इंडिया के मजदूर यह अच्छी तरह समझ गये हैं कि आज नौकरी मिलनी कितनी मुश्किल है। ईस्ट इंडिया में अभी नित नई नौटंकियों के हालात बने हैं परन्तु धोखों में आ कर नौकरी छोड़ने और फिर पछताने की कोई तुक नहीं है। मैनेजमेन्टें चाहती तो पता नहीं क्या-क्या हैं पर मजदूर मिल-जुल कर उन पर लगाम लगाते हैं। ईस्ट इंडिया के मजदूर अपनी नकेल लीडरों के हाथों से छुड़ा कर मैनेजमेन्ट की छँटनी स्कीम को फेल कर सकते हैं। परेशानी से घबरा कर तवे से चूल्हे में कूदने की बजाय आपस में खुले विचार-विमर्श और निर्णयों में सब की साझेदारी से ईस्ट इंडिया वरकर अपनी नौकरियाँ बचा सकते हैं। भाषण सुनने वाले बने रहना बरबादी की राह है।■

बोलते तथ्य

दस महीनों के बकाया वेतन की हताशा-निराशा के बावजूद **झालानी टूल्स** के मजदूरों द्वारा हकीकत को देखना आवश्यक है ताकि कल माथा पीटने से बच सकें।

कोई मजदूर हो चाहे कोई स्टाफ में झालानी टूल्स का प्रत्येक इम्पलाई कम्पनी से एक लाख रुपये से अधिक का लेनदार है। इम्पलाइज की बकाया वेतन, बकाया बोनस, बकाया एल टी ए, बकाया वर्दियों जूतों के पैसे, बकाया प्रोविडेन्ट फण्ड तथा सर्विस-ग्रेच्युटी की कुल राशि 50 करोड़ रुपये के दायरे में है। कम्पनी पर बैंको का कर्ज, ई एस आई की बकाया, बिजली बोर्ड की बकाया आदि भी 50 करोड़ रुपये के दायरे में है। यानि, झालानी टूल्स लिमिटेड पर भारी देनदारी है। कम्पनी की सम्पत्ति से देनदारी दुगनी से ज्यादा हो गई है। झालानी टूल्स की स्थिति **मैटल बॉक्स** से भी बुरी है।

फैक्ट्रियों का आज कोई मालिक नहीं होता इसलिये कम्पनियों की देनदारी कम्पनियों की सम्पत्ति से अदा की जाती है। कम्पनियों के दिवालिया होने पर उनके कमजोर लेनदारों के पैसे डूबते हैं।

दिवालिया घोषित किये जाने के कगार पर खड़ी झालानी टूल्स में मैनेजमेन्ट लीडरों के साथ मिल कर कम्पनी की सम्पत्ति बेचने में चाँदी कूट रही है। कट-कमीशन के लिये मारा-मारी ने लीडरों में तीन गिरोह बना दिये थे जो एक-दूसरे के खिलाफ आग उगल रहे थे पर इधर वे दिल्ली के बड़े लीडरों की छत्रछाया में फिर एक हो गये हैं। दरअसल गिरोहों की यह एकता झालानी टूल्स के थर्ड प्लान्ट को बेचने में हिस्सा-पत्ती पर हुई सहमति है। थर्ड प्लान्ट को बेचना कम्पनी बन्द होने से पहले का आखिरी बड़ा सौदा लगता है।

सितम्बर 96 में चालू की गई नई नौटंकी की 29 जनवरी को समाप्ति पर खाली हाथ झालानी टूल्स के मजदूर सोचते हैं कि जैसे भी हो कम्पनी चलेगी तो कुछ मिलेगा। परन्तु यह सोच गलत है क्योंकि यह तथ्यों को नकारती है। लीडरों की नई डुगडुगी पाँच हजार का लालच दिखा कर मजदूरों के 95 हजार डुबाने की साजिश का हिस्सा है।

मजदूर तब तक कमजोर लेनदार रहेंगे जब तक वे बिचौलियों के पीछे चलेंगे। झालानी टूल्स के मजदूरों का बार-बार यह अनुभव रहा है कि अपने बढते बकाया को लेने के लिये मजदूरों ने जब-जब आवाज उठानी शुरू की है तब-तब कोई-न-कोई नौटंकी कर लीडरों ने कमान अपने हाथों में ले ली है। मजदूर असन्तोष को लीडरों ने बार-बार अपने स्वार्थ में भुनाया है। ऐसे हर वाकये के बाद झालानी टूल्स के मजदूरों का बकाया घटने की बजाय बढा है। इसी राह पर **ईस्ट इंडिया की जूट मिल** के मजदूर चले थे और 1983 में बन्द हुई जूट मिल के 900 मजदूरों को आज तक हिसाब नहीं मिला है जबकि बैंकों ने फैक्ट्री की मशीनें नीलाम करके 1988 में अपने कुछ पैसे ले लिये। झालानी टूल्स के मजदूर अपने खुद के तथा अन्य मजदूरों के लगी ठोकरों से सबक लेंगे और अपने हित में सब वरकर खुले विचार-विमर्श द्वारा निर्णय लेंगे तो कमजोर की जगह ताकतवर लेनदार बन कर अपने पैसे हासिल कर सकेंगे।■

यू पी रोडवेज

मैं, केवल राम, 2 मार्च 1949 को यू पी रोडवेज के हाथरस डिपो में भर्ती हुआ था। दस साल डिपो की वर्कशॉप में काम करने के बाद मई 1959 में मैं रोडवेज में ड्राइवर बन गया। 1980 में मुझे नौकरी से निकाल दिया गया। मुझे आज तक अपनी 16 महीनों की ग्रेच्युटी नहीं दी गई है। उत्तर प्रदेश के परिवहन मंत्री के आदेश के बावजूद मुझे 1991 से पेन्शन भी नहीं दी गई है। मेरी पेन्शन का नम्बर 48 है। हाथरस तहसील के कर्मचारी रामकिशन ने मुझे यह नम्बर बताया था।

29.1.97 — **केवल राम,** सी—24 संजय कालोनी, फरीदाबाद—121005

रीइंजिनियरिंग-रीस्ट्रकचरिंग

एस्कोर्ट्स मजदूरों के सोचने-समझने का समय

आजकल **एस्कोर्ट्स ग्रुप** में नई मशीनों–नई योजनाओं, फैक्ट्रियों का इस लिमिटेड से उस लिमिटेड में ट्रान्सफर और नित नये कॉलोब्रेशनों का शोर है। एस्कोर्ट्स ग्रुप का प्रत्येक इम्पलाई, हर मजदूर व स्टाफ के सब सदस्य प्रभावित होगें इसलिये जो प्लान हैं उनके विस्तार में जाना जरूरी है ताकि एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट के प्रस्तावित हमलों को फेल किया जा सके।

फरीदाबाद व अन्य जगहों पर कार्यरत 24000 लोगों को काट कर एस्कोर्ट्स मैनेजमेन्ट 14000 करना चाहती है और साथ ही साथ प्रोडक्शन दुगना करना चाहती है। भारी-भरकम शब्दों रीइंजिनियरिंग व रीस्ट्रकचरिंग का यह है असल मतलब।

एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट में एक डिपार्टमेन्ट में कुछ वरकरों से दो हफ्ते 8 घन्टे में 12 घन्टे का प्रोडक्शन लिया गया। इस पर 8 घन्टे के लिये 12 घन्टे के पैसे देने के संग-संग एक मैनेजर ने खुद जा कर तीन-तीन सौ रुपये डिपार्टमेन्ट में बाँटे। एस्कोर्ट्स मजदूरों की अच्छी तरह समझने की जरूरत है कि फैक्ट्री प्रोडक्शन और फसल काटने में क्वालिटी का फर्क है – फैक्ट्री में काम कभी खत्म नहीं होता। और फिर, फैक्ट्री अपना खेत नहीं है कि हाड़ तोड़ कर सुस्ता लेंगे – काम नहीं है तो नौकरी से निकाल दिया जाता है।

अच्छे वरकर, बुरे वरकर का ढोल एस्कोर्ट्स में पीटा जा रहा है।

अच्छे वरकर → वे मजदूर जो शिक्षा-दीक्षा-संस्कार से इस कदर प्रभावित हैं कि मशीनों की चाकरी को पूजा मानते हैं। सिर झुका कर काम में लगे रहने और मैनेजमेन्ट जब कहे तब हाथ जोड़ कर नौकरी छोड़ देने वाले मजदूर अच्छे वरकर हैं।

मैनेजमेन्ट की पालिसियाँ लागू कराने के लिये दिन-रात एक करने वाले लीडर सबसे अच्छे वरकर हैं। एस्कोर्ट्स में तो किस्सा प्रचलित है कि कम्पनी चेयरमैन एक लीडर को सौ मैनेजरों से ज्यादा लाभ कमा कर देने वाला कहते थे।

बुरे वरकर → वे मजदूर जो बचपन से जारी सारी कूट-पीट के बावजूद मनुष्य रहते हैं और कोशिश करते हैं कि काम का बोझ कम से कम उठाना पड़े। यह वरकर मैनेजमेन्टों के लिये सिरदर्द होते हैं। असल में बुरे वरकर अन्य मजदूरों के लिये राहत होते हैं क्योंकि यह मैनेजमेन्टों को टँगड़ी मारते हैं। इसीलिये मैनेजमेन्ट और उसके भोंपू एस्कोर्ट्स मजदूरों पर बड़े हमले की तैयारी के सिलसिले में बुरे वरकरों के खिलाफ अन्य मजदूरों को भड़का रहे हैं। "ये काम नहीं करते फिर भी तनखा के साथ-साथ इन्सैन्टिव भी लेते हैं" के राग भाषणों में भी अलापे जाने लगे हैं।

वी आर एस : इक्के-दुक्के को छोड़ कर वी आर एस लेने वाले एस्कोर्ट्स वरकर भी **केल्विनेटर** और **युनिवर्सल इंजिनियरिंग** में वी आर एस लेने वाले वरकरों की तरह पछतायेंगे। लालच या डर से नौकरी छोड़ना आज अँधे कूये में कूदना है।

सौ ग्राम गुड़ के बदले में दस पैसे आज भी एस्कोर्ट्स मजदूरों को मिलते हैं और यह एग्रीमेन्ट का कमाल है। ऐसा ही चमत्कार ओवर टाइम सिंगल रेट से का है। अब मैनेजमेन्ट ओवर टाइम खत्म करने के लियेँ कदम उठा रही है इसलिये ... इसलिये ओवर टाइम कानून अनुसार डबल रेट से दिया जाये को डिमान्डों में शामिल कर लिया गया है।

पिछले पन्द्रह साल पर नजर दौड़ाने पर एस्कोर्ट्स में एग्रीमेन्टें साफ-साफ धोखाधड़ियों का पिटारा साबित होती हैं। आने वाले दिनों में हालात बहुत नाजुक होती लगती हैं। इसलिये एस्कोर्ट्स मजदूरों के लिये यह सर्वोपरि महत्व का है कि चन्द लोगों के हाथों से अपनी नकेल छुड़ायें। खुले विचार-विमर्श में सब मजदूरों की शिरकत और फैसलों में सब मजदूरों की साझेदारी की राह पर बढ़ कर एस्कोर्ट्स वरकर हमलों को फेल कर सकते हैं। मैनेजमेन्ट को मजदूर मिल-जुल कर रोक सकते हैं। ■

श्रमिक शिक्षा

पावर कट के दौरान जनरेटर खराब हो जाने पर इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित एक फैक्ट्री में मिली फुर्सत के क्षणों में मजदूरों से यह रोचक बातें सुनने को मिली :

"केन्द्र सरकार की एक अफसर हमें पढाने आती थी। मैडम हमें बताती कि औजार ऐसे रखा करो ताकि आसानी से इस्तेमाल में लाये जा सकें। डाई टेबल पर ठीक से रखने को कहती। लैट्रिन से पाँच मिनट में और पेशाब से दो मिनट में लौट आने की सीख देती। वे कहती थी कि बचे टाइम में दो डाई ज्यादा माल निकला तो महीने में कम्पनी को कई लाख का फायदा होगा।

मैडम कहती कि मैनेजमेन्ट जितना पेमेन्ट दे उसी में गुजारा करो और साथ ही साथ बचत भी करो।

मैडम हमें कभी-कभी हमारी फैक्ट्री के डायरेक्टर के साथ अपने घर भी पढाने के लिये बुलाती थी। शुरू-शुरू में वरकरों और सुपरवाइजरों को एक साथ ही पढाती थी।

मैडम की पढाई का हमने यह मतलब निकाला कि मजदूर बिना कुछ लिये प्रोडक्शन बढाते जायें। वो हमेशा मैनेजमेन्ट का पक्ष लेती थी। वो जो पढाती थी वह हम खूब समझते थे इसलिये करते हम अपने मन की ही थे।"

बातचीत में शिरकत कर एक सुपरवाइजर ने कहा, "हमें अलग से किताबें भी दी थी। मैडम की बातों का जोर वरकरों से काम करवाने के तरीकों पर और प्रोडक्शन बढाने पर होता था।"

ई एस आई

एक मित्र से फरीदाबाद में ई एस आई डिस्पैन्सरियों तथा ई एस आई अस्पतालों के बारे में हमें एक लम्बी रिपोर्ट मिली है। मित्र की बातों को काफी कुछ उलट कर हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

यूँ तो ई एस आई स्कीम मैनेजमेन्टों के लिये बहुत ही लाभदायक है पर फिर भी कुछ नासमझ मैनेजमेन्टें जो कि अपनी नादानी के चलते आमतौर पर छोटी फैक्ट्रियों पर ही काबिज हैं, टुच्ची हेरा-फेरियों के लिये ई एस आई स्कीम का लाभ नहीं उठाती और इधर-उधर रिश्वतें देने में "टाइम इज मनी" के दौर में समय बरबाद करती हैं।

रुपये-पैसे से लबालब ई एस आई कारपोरेशन वेतन सीमा के जाल को 6500 रुपये तक फैला कर नोटों के ढेर लगा रही है परन्तु अधिकतर ई एस आई कर्मचारियों की वर्किंग कन्डीशनें बहुत खराब हैं और ई एस आई कार्ड होल्डर मरीजों को बद से बदतर होती स्थितियों से गुजरना पड़ रहा है। फरीदाबाद में तीन नम्बर में ई एस आई अस्पताल में घन्टों मरीजों की लाइनों से घिरे डॉक्टरों का बुरा हाल है। बीमार लोगों का एक के बाद दूसरी लाइन में घन्टों खड़े होना स्वास्थ्यलाभ केन्द्र की बजाय यातनागृह का लक्षण है।

ई एस आई कारपोरेशन के अपने नियमों के अनुसार जितने इम्पलाई होने चाहियें उनसे आधे से भी कम फरीदाबाद में हैं। परिणामस्वरूप ई एस आई में काम करने वाले तो परेशान हैं ही, बीमार होने पर ई एस आई कार्ड वाले मजदूर और भी ज्यादा परेशान होते हैं।

ई एस आई में काम करते हों या अन्य स्थानों पर, मन तो आज हर वरकर का बीमार है। ठीक-ठाक तन वाले थोड़े-से वरकर मन के कुछ चैन के लिये ई एस आई से कुछ लाभ उठा लेते हैं और बदले में ई एस आई वरकरों को थोड़ी मौज-मस्ती के लिये कुछ दे देते हैं। परन्तु मन के संग-संग तन से भी बीमार होने पर जब कोई मजदूर ई एस आई जाता/जाती है तब ई एस आई वरकर मरीज को परेशान कर कुछ वसूलने के लिये कुचक्र रचते हैं। इससे ई एस आई वालों और अन्य वरकरों में एक-दूसरे के प्रति विरोध पैदा होता है। यह दोनों के लिये नुकसानदायक है।

तन-मन से बीमारों की मदद करने के संग-संग मन से बीमारों को सहायता देना ई एस आई को मजदूर हित में इस्तेमाल करने की दिशा में एक कदम हो सकता है।

और बातें अगले अंक में। (जारी)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। **RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी–546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।